International Journal of Home Science 2017; 3(3): 46-47

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2017; 3(3): 46-47
© 2017 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 21-07-2017
Accepted: 24-08-2017

डॉ अंजना कुमारी
+2 शिक्षिका (गृह-विज्ञान)
शिव गंगा बालिका
+2 उ० वि०, मधुबनी,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ अंजना कुमारी
+2 शिक्षिका (गृह-विज्ञान)
शिव गंगा बालिका
+2 उ० वि०, मधुबनी,
बिहार, भारत

बिहार में गृह विज्ञान के द्वारा व्यक्ति, परिवार एवं समाज को सशक्त बनाना

डॉ अंजना कुमारी

सार-सारांश

देश के युवाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए राज्यों द्वारा विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न संस्थान खोले जा रहे हैं| इन क्षेत्रों में कटाई, हस्तशिल्प, वस्त्र डिजाइन आदि विषयों में डिप्लोमा कोर्स कराये जाते हैं| स्वरोजगार में व्यक्ति अपना कार्य आरम्भ कर सकता है| गृह विज्ञान शिक्षण के बाद महिलाएँ निम्न रोजगार कर धनोपार्जन कर सकती है| जैसे हॉबी कक्षाएं चलाना, होटल इंडस्ट्री में रोजगार, घर में बने अचार, बेकरी के खाद्य पदार्थ बनाकर बेचना आदि कार्य करके व्यक्ति परिवार एवं बिहार जैसे पिछड़े राज्य को सशक्त किया जा सकता है| बिहार में गृहविज्ञान के द्वारा व्यक्ति परिवार एवं समाज को सशक्त बनाना|

कूट-शब्द: प्रशिक्षण, संस्थान, कटाई, हस्तशिल्प, वस्त्र डिजाइन, डिप्लोमा कोर्स, स्वरोजगार, महिलाएँ, बिहार, गृहविज्ञान

प्रस्तावना

प्राचीन काल में व्यक्ति की आवश्यकताएं सीमित होती थी परन्तु वर्त्तमान युग विज्ञान तथा भौतिकता का युग है| आज परिस्थितियों में बदलाव आया है और इन बदलती हुई परिस्थितियों ने गृह के स्वरुप को भी परिवर्तित कर दिया है| भौतिकवादी विचारधारा के कारण एक ओर व्यक्ति को असंख्य सुविधाएं प्राप्त हैं तो दूसरी ओर पारिवारिक जीवन की कठिनाईयों का सामना करते हुए वह संघर्षरत तथा तनाव ग्रस्त हैं| लोग सैद्धांति तथा व्यवहारिक ज्ञान के अभाव में अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में असमर्थ हो जाते हैं| भौतिकी साधनों से पूर्ण लाभ उठाने के लिए परिवार के उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है|

गृह विज्ञान की परिभाषाएं

गृह विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है| 'गृह' तथा 'विज्ञान'| इस प्रकार गृह से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं के व्यवस्थित ज्ञान को ही गृह विज्ञान कहा जाता है| गृह से तात्पर्य है- 'निवास स्थान' और विज्ञान से तात्पर्य है- 'व्यवस्थित ज्ञान' और दोनों के संयोजन से ही गृह विज्ञान बनता है| जब गृह विज्ञान को घरेलु विज्ञान तथा गृह-अर्थशास्त्र कहा जाता था उस समय इसका क्षेत्र काफी संकुचित था परन्तु धीरे-धीरे इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया और इसे गृह विज्ञान के नाम से जाना जाने लगा है|

भारत में गृह विज्ञान का विकास

लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली में गृह विज्ञान विषय सन् 1932 में प्रारम्भ हुआ| घरेलू उपकरण तथा उनका उपयोग भारतीय सामाजिक सुधार तथा भारतीय राष्ट्रीयता आदि से परिचय कराने के लिए इस विषय को स्नातक स्तर पर मान्यता दी गई, इसके पश्चात मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1952 में इसे चेन्नई में स्नातक स्तर पर मान्यता दी गई| इसके बाद कई विश्वविद्यालयों ने इस विषय को अपने यहाँ प्रारम्भ किया| आज प्रत्येक विश्वविद्यालय में गृह विज्ञान विषय का अध्ययन किया जा रहा है|

गृह विज्ञान-गृह कला के अंतर्गत हमें उन सभी नियमों और वस्तुओं का अध्ययन करते हैं जो सुन्दर, सुचारू तथा

सुव्यवस्थित घर बनाने में गृहिणी के जानने योग्य है|
बिहार में गृह विज्ञान के द्वारा एक व्यक्ति को समाज के परिवार को सशक्त बनाया जा सकता है| गृह विज्ञान विषय में अन्य विज्ञान समविष्ट है, जैसे- रसायन-शास्त्र, बायोकेमिस्ट्री, भौतिकी शास्त्र, शरीर विज्ञान शास्त्र, वैक्टीरियोलौजी, स्वास्थय एवं स्वच्छता, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा अन्य|

गृह विज्ञान में विषयों के मूल स्वरुप

अर्थशास्त्र (Economics): गृह विज्ञान अर्थशास्त्र से भी सम्बंधित है| आय तथा व्यय का संतुलन, नियोजन ईवा संसाधनों की बजट तथा छोटे स्तर पर धन के प्रबंधन की जानकारी दी जाती है| तभी पारिवारिक अर्थव्यवस्था गृहिणी ठीक से संचालित कर पाती है| यदि गृहणी गृहविज्ञान के अर्थशास्त्र में निपुण हो तो एक परिवार कम आय के बावजूद भी खुशहाल रहता है|

भौतिकी शास्त्र (Physics): छात्राओं में इसकी सहायता से गृह उपकरणों को चलाने की समझ उत्पन्न होती है| घरेलु उपकरणों का संचालन करके ही घर में समय और शक्ति की बचत होती है, कम से कम समय में घर के विभिन्न कामों को निपटारा हो जाने से व्यक्ति पार्ट टाइम जॉब भी कर सकता है|

रसायन शास्त्र (Chemistry): गृह विज्ञान का रसायन शास्त्र से भी सम्बन्ध होता है| भोजन पकाते समय जीवाणु विज्ञान पर विचार करते समय तथा धब्बे साफ करते समय रसायनशास्त्र के ज्ञान का उपयोग किया जाता है|

जीवविज्ञान (Biology): जीवविज्ञान भी गृह विज्ञान से सम्बंधित है| मानव शरीर क्रिया विज्ञान की जानकारी या आहार नियोजन की जानकारी दी जाती है| इसी से सम्बंधित प्राथमिक उपचार, घरेलु उपचार तथा सामान्य या रोगी व्यक्ति का आहार से सम्बंधित जानकारी भी दी जाती है|

समाजशास्त्र (Sociology): गृह विज्ञान में गृह की अवधारणा समाज से ही पूरी हो सकती है| अतः पारिवारिक सम्बन्ध और बच्चे का विकास के सम्बन्ध में बाल विकास के अंतर्गत बच्चों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक विज्ञान की शिक्षा के द्वारा हमें एक अच्छे परवरिश की जानकारी दी जाती है जो बच्चे समाज के कर्णधार होते हैं और आगे चलकर वही बच्चे एक व्यक्ति से परिवार का निर्माण करता है और एक परिवार से ही समाज का निर्माण होता है|

मनोविज्ञान (Psychology): से भी सम्बंधित है| पारिवारिक सदस्यों की रूचियों, मनोवृत्तियों के विषय में जानकारी ही उनसे अच्छे सम्बन्ध बनाए जा सकते हैं|
विभिन्न विषयों में सममिश्रण के कारण गृह विज्ञान विषय के द्वारा हम बिहार के समाज को सशक्त बना सकते हैं| इस विषय के कई कैरियर संभावनाएं भी हैं| सरकारी नौकरियों के साथ-साथ घरेलु उद्योग धंधे भी की जा सकती है या पार्ट टाइम जॉब भी इस विषय के अध्ययन से किया जा सकता है| जैसे कैटरिंग सर्विस, क्रेच खोलना, पुष्प सज्जा, कंसलटेंट, पोषण विशेषज्ञ, संसाधन प्रबंधक, शिक्षक, मानवीय सेवा व्यवस्था का प्रबंधक, आंतरिक सज्जाकार, होटल उद्योग में कर्मचारी जैसे- हाउसकीपिंग तथा फ्रन्ट ऑफिस, इन्वेस्टमेंट सलाहकार, उपभोक्ता सलाहकार आदि|

गृह-विज्ञान से नौकरी एवं रोज़गार

गृह विज्ञान में पोषण विशेषज्ञ के रूप में स्वास्थय, ब्यूटी एवं स्लिमिंग सेंटर तथा अन्य क्षेत्रों में सलाहकार, स्कूलों में काउनसलर, आंगनबाड़ी केंद्र में सेविका, पर्यवेक्षिका या C.D.P.O. के पद पर काम किया जा सकता है|
गृह विज्ञान का उद्देश्य है कि व्यक्ति तथा परिवार का अच्छा तरह विकास इस विषय के द्वारा ऐसी शिक्षा दी जाती है कि बहुविकल्पीय करियर के चुनाव में स्वतंत्रता मिलती है| वह रोजगार प्राप्त कर सकता है तथा अपना व्यवसाय भी प्रारम्भ कर सकता है|
आज लगभग बिहार के समस्त विश्वविद्यालय में गृह-विज्ञान के अंतर्गत स्नातक तथा स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान की जाती है| कुछ महाविद्यालयों में जन स्वास्थय पोषण तथा डायटेटिक्स का डिप्लोमा भी दिया जाता है| इस कोर्स में बी॰एस॰सी॰ करके ही स्थान पाया जा सकता है|
विश्वविद्यालय में व्याख्याता बनने के लिए सभी छात्राओं को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा चलाया गया राष्ट्रीयता योग्यता टेस्ट उत्तीर्ण करना पड़ता है इसके अतिरिक्त अनुसंधान भी किया जा सकता है|

निष्कर्ष

बिहार में अभी भी गृह विज्ञान उपेक्षा का दंश झेल रही है| अभी भी भ्रान्ति है गृह विज्ञान कमजोर छात्रा ही पढाई करती है, क्योंकि उसमें सिर्फ खाना बनाया या कपड़े धोने की जानकारी मिलती है| लेकिन हमें पढाई कर के जाना है| यह विषय हमें लगभग सभी विषय से जोडती है| साथ ही हमें एक सुयोग्य व्यक्ति, गृहणी बनती है| जिसके द्वारा हम अपने परिवार को व्यवस्थित कर सकते हैं| हमें अपनी आवश्यकता की हर बात मालूम होती है और हम एक अच्छे परिवार के साथ-साथ एक अच्छे, समाज का निर्माण कर सकते हैं| गृह विज्ञान विषय के अध्ययन कर महिलाएं अपने बल पर समाज में अपनी सशक्तिकरण का परिचय दे सकती है| हमे अपने विषय को सशक्त बनाने के लिए अभी भी प्रयास करना होगा और धीरे-धीरे हम अपने योगदान से समाज की फैली भ्रान्ति को दूर कर देना है और बिहार के व्यक्ति, परिवार और समाज को सशक्त बनाना है|

सन्दर्भ-सूचि

1. सिंह, इंदु प्रकाश, वोमेन, लॉ एंड सोशल चेंज इन इंडिया, रेडियंट पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1989
2. वारिंगा, साक़िया(सं.) वोमेन्स स्ट्रगल एंड स्ट्रेटेजी, गोर पब्लिशिंग कंपनी, ग्रेट ब्रिटेन, 1988
3. अल्तेकर, ए.एस. द पोजीशन ऑफ वोमेन इन हिन्दू सिविलाइज़ेशन, मोतीलाल बनारसीदास, 1962
4. बेग, तारा अली, वोमेन ऑफ इंडिया, पब्लिकेशन डिवीजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 1958
5. अग्रवाल, बीना, वोमेन, पोवेर्टी एंड एग्रीकल्चरल ग्रोथ इन इंडिया, जर्नल ऑफ पीजेंट स्टडीज, वॉल्यूम-13, 4, 1987